कथा सरिता

बीज से वृक्ष का ज्ञान

महर्षि उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतु अत्यंत प्रतिभाशाली थे। गुरुकुल में निरंतर बारह वर्षों तक शास्त्रों का अध्ययन करने के उपरांत जब वे महर्षि के पास लौटे तो उन्होंने उनसे प्रश्न किया - ''वत्स! वह क्या है, जिसका ज्ञान होने से सृष्टि के समस्त पहलुओं का ज्ञान हो जाता है।'' इस प्रश्न का उत्तर श्वेतकेतु से न देते बना तो उनकी जिज्ञासा का समाधान करते हुए महर्षि उद्दालक बोले – ''पुत्र! जिस प्रकार स्वर्ण का ज्ञान हो जाने से स्वर्ण से बनी सभी वस्तुओं का ज्ञान हो जाता है, कृषि का ज्ञान हो जाने से सभी अन्य पदार्थों को उपजाने का ज्ञान हो जाता है, वैसे ही आत्मा का ज्ञान हो जाने से सृष्टि के समस्त पहलुओं का ज्ञान हो जाता है। तुम अब अपना जीवन उसी आत्मज्ञान को प्राप्त करने में लगाओ।''

विवेक अनुसार निर्णय

एक व्यक्ति ने कुत्ता और बिल्ली पाल रखे थे। बिल्ली दिन और रात म्याऊँ-म्याऊँ करती, इस कारण वह व्यक्ति आराम नहीं कर पाता। एक दिन उसने चिढ़कर बिल्ली की पिटाई कर डाली और बोला– ''क्यों सारे दिन म्याऊँ-म्याऊँ करती रहती है?'' कुत्ते ने यह देखा तो डर के मारे उसने कभी न बोलने का निश्चय कर लिया। उस रात चोर उसके घर में चोरी करने घुसे। कुत्ते ने सब देखते हुए कुछ नहीं कहा। अगले दिन उस व्यक्ति ने कुत्ते को पीटते हुए कहा– ''तुझे इसलिए पाला था कि चोर आए तो तू भौंककर सूचित करे और तूने मौन साध लिया।'' वास्तव में किन्हीं परिस्थितियों में मौन अच्छा है तो किन्हीं में बोलना। मनुष्य को यह निर्णय अपने विवेक के अनुसार करना चाहिए।

एक उसका सहारा

जाड़े के दिन थे। शाम हो गई थी। आसमान में बादल छाए थे। एक नीम के पेड़ पर बहुत से कौए बैठे हुए थे, वे सब काँव-काँव कर रहे थे। उसी समय एक मैना आई और उस नीम के पेड़ की डाल पर बैठ गई। मैना को देखते ही कौए उस पर टूट पड़े। मैना ने कहा– ''बादल बहुत हैं, इसलिए आज जल्दी अंधेरा हो गया है। मैं अपने घोंसले का रास्ता भूल गई हूँ, आज रात मुझे यहीं बैठे रहने दो। इस सर्दी में यदि वर्षा हुई और ओले पड़े तो मेरे प्राण संकट में पड़ जाएंगे। भगवान के लिए मुझ पर दया करो, मुझे आज यहीं रुकने दो।'' कौओं ने कहा– ''तू बहुत भगवान का नाम लेती है तो भगवान के भरोसे यहाँ से चली क्यों नहीं जाती? तू नहीं जाएगी तो हम सब तुझे मारेंगे।'' बेचारी मैना वहाँ से उड़ गई और थोड़ी दूर जाकर आम के पेड़ पर बैठ गई। रात को आंधी आई, बादल गरजे और बड़े-बड़े ओले पड़ने लगे। कौए काँव-काँव करके इधर से उधर थोड़-बहुत उड़े, परंतु ओलों की मार से घायल होकर ज़मीन पर गिर पड़े। बहुत से कौए मर भी गए। मैना जिस आम के पेड़ पर बैठी थी, उसकी एक मोटी डाल आंधी में टूट गई। डाल टूटने पर उसकी जड़ के पास पेड़ में कोटर बन गया। मैना कोटर से निकली और उड़ने लगी। उसे उड़ता देख एक घायल कौए ने उससे पूछा– ''तुम रात में कहाँ रही और ओलों की मार से कैसे बची?'' मैना बोली– ''मैंने भगवान से प्रार्थना की और उन्होंने मुझे बचा लिया।'' दु:ख में पड़े असहाय जीव को भगवान के सिवाय और कौन बचा सकता है।

जो दिखता, वो ही सच नहीं

दो बंदर एक दिन घूमते-घूमते एक गाँव के समीप पहुँच गये। उन्होंने वहाँ फलों से लदा पेड़ देखा। एक बंदर ने चिल्लाकर कहा– ''इस पेड़ को देखो। ये फल कितने सुंदर दिख रहे हैं। ये अवश्य ही स्वादिष्ट होंगे। चलो, हम दोनों पेड़ पर चढ़कर फल खाएँ।'' दूसरा बंदर बुद्धिमान था। उसने कुछ सोचकर कहा– ''नहीं, नहीं। ज़रा ठहरो! यह पेड़ गाँव के समीप है और इसके फल इतने सुंदर और पके हुए हैं, लेकिन यदि ये फल अच्छे होते तो गाँव वाले ही इन्हें तोड़ लेते, इन्हें ऐसे ही पेड़ पर नहीं लगे रहने देते। लेकिन इन्हें देखकर ऐसा लगता है कि किसी ने भी इन फलों को हाथ तक नहीं लगाया है। हो सकता है कि ये फल खाने लायक न हों।'' उसकी ये बातें सुनकर पहले बंदर ने कहा– ''कैसी बेकार की बातें कर रहे हो। मुझे तो इन फलों में कुछ बुरा नहीं दिख रहा। मैं तो इन्हें खाने जा रहा हूँ, तुम्हें साथ चलना है तो चलो।'' दूसरे बंदर ने उसे फिर से सावधान करते हुए कहा– ''तुम्हें इस बारे में फिर से सोचकर निर्णय लेना चाहिए। मैं भोजन के लिए कुछ और ढूंढ़ता हूँ।'' पहला बंदर पेड़ पर चढ़कर फल खाने लगा, परंतु वे फल ही उसका अंतिम भोजन बन गए; क्योंकि वे फल ज़हरीले थे। दूसरा बंदर जब लौटा तो उसने अपने साथी को मरा हुआ पाया। इसीलिए कहा जाता है कि हर चमकने वाली चीज़ सोना नहीं हुआ करती।

अटूट सिद्धान्त

साबरमती आश्रम में एक बार चोरों ने सेंध लगाई और कस्तूरबा जी के कपड़ों से भरे संदूक को ले गए। जब गांधी जी को यह पता चला तो उन्होंने उल्टा प्रश्न किया– ''बा के पास संदूक भर कपड़े कैसे थे?'' इसपर बा ने कहा– ''मेरी पोतियाँ जब मेरे पास आएंगी तो मुझे उन्हें साड़ी देकर विदा करना पड़ेगा। इसलिए भेंट में मिली साड़ियाँ मैंने संदूक में रख छोड़ी थीं।'' गांधी जी बोले – ''अपरिग्रह के सिद्धान्त को अपनाने के बाद हमें इस तरह संग्रह नहीं करना चाहिए। सिर्फ आवश्यकता की वस्तुएँ ही रखनी चाहिए और शेष सभी आश्रम कार्यालय में जमा कर देनी चाहिए।'' गांधी जी ने पुन: बा से कहा– ''लड़कियाँ आएँ, खाएँ-पीएँ-रहें, लेकिन जिन्होंने गरीबी का जीवन बिताने का व्रत लिया है, उन्हें इस तरह भेंट देना उचित नहीं।'' इसके बाद बा ने कभी कपड़ों का संग्रह नहीं किया।

जीवन मृत्यु एक समान

एक राजा किसी बात पर सन्यासी ने क्रोधित हो गया। उसने क्रोध में अपने सेनापति को उस सन्यासी को मारने का आदेश दिया। राजा का आदेश सुनकर सन्यासी बोला– ''महाराज! मैं तो अस्तित्व में ही नहीं हूँ, फिर मुझे यह तलवार कैसे मार सकती है?'' जिस शरीर के साथ मेरा कभी कोई संबंध ही नहीं रहा, जो पहले ही मुझसे अलग है – उसे आपकी तलवार और अलग कैसे करेगी?'' उसके इन वचनों के साथ जब राजा ने उस सन्यासी की निर्भीक व निस्पृह आँखों को देखा तो उसने अपने सेनापति से कहा– ''जो मृत्यु से भयभीत नहीं है, उसे तो मृत्यु भी नहीं मार सकती।'' यह कहते हुए राजा ने सन्यासी से अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांगी। महापुरुषों के लिए जीवन व मृत्यु दोनों समान होते हैं।

आलम बाग-लखनऊ(उ.प्र.)। ज्ञानचर्चा के पश्चात् स्वाती सिंह,राज्यमंत्री,कृषि विपणन,कृषि विदेश व्यापार,महिला कल्याण को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दिव्या।

नगर-भरतपुर। श्री राम दर्शन यात्रा में आयोजित 'शिव दर्शन चित्र प्रदर्शनी' के उद्घाटन पश्चात् महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री अनिता भदेल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हीरा, ब्र.कु. संध्या, विधायक बहन अनिता सिंह, विधायक विजय बंसल तथा अन्य।

शांतिवन। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अंतर्गत 'नि:शुल्क योग शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजयोगी ब्र.कु. करुणा, ब्र.कु. बनारसी लाल शाह, ब्र.कु. आत्मप्रकाश, ब्र.कु. भरत, ब्र.कु. बाबूलाल, ब्र.कु. दिलीप तथा अन्य।

रादौर-कुरूक्षेत्र। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के स्मृति दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद चित्र में ब्र.कु.सरोज, ब्र.कु.पुष्पा, ब्र.कु.राज व ब्र.कु.राजू।

मेहम-हरियाणा। सिटी हाई स्कूल में 'समर कैम्प' कराने के दौरान बच्चों का 'राजयोग मेडिटेशन द्वारा एकाग्रता' विषय पर मार्गदर्शन करते हुए ब्र.कु. सुमन। साथ हैं ब्र.कु. हरेन्दर तथा स्कूल डायरेक्टर यशपाल कटारिया।

शाहकोट-पंजाब। मानव कल्याण गऊधाम के शिलान्यास कार्यक्रम के दौरान ब्र.कु. तुलसी को तिलक लगाते हुए पण्डित माधव जी। साथ हैं सोशल वेलफेयर सोसायटी के सदस्य गण।